विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र   डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
शिवराजविजय   महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या   दिनांक - 22/09/2020

अरुण एष: प्रकाश: पूर्वस्यां भगवतो मरीचि-मालिन: । एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिश: दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोक: कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधार: सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं, जनयति, अयमेव, वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदा:, एनेनैव कृता कल्पभेदा:, एनमेवाश्रित्य भवति परमेष्ठिन: परार्द्धसंख्या, असावेव चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत्, वेदा ह्यस्यैव वन्दिन:, गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरह: उपतिष्ठन्ते । धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य, प्रणम्य एष विश्वेषामिति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवन-पटुर्विप्रबटु: ।

अर्थ-

पूर्व दिशा में प्रकाश की यह लाली अंशुमाली भगवान सूर्य की है। यह भगवान् सूर्य आकाशमण्डल के रत्न, नक्षत्र-

मण्डल के चक्रवर्ती सम्राट्, इन्द्र की दिशा पूर्व रूपी नायिका के कानों के कुण्डल, ब्रह्माण्ड रूपी भवन के दीपक, कमलसमूह के प्रेमी, चक्रवाकसमूह के शोक निवारक, भौंरों के आश्रय, सम्पूर्ण कार्यकलापों के सूत्रधार और दिन के अधिष्ठाता हैं। यही दिन-रात के उत्पादक हैं, यही वर्ष को 12 भागों में विभक्त करते हैं, यही छः ऋतुओं के कारण हैं. यही उत्तरायण और दक्षिणायन को स्वीकार करते हैं, इन्होंने ही युगों को (सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग के रूप में) बाँटा है, इन्होंने ही कल्पों का विभाजन किया है। इन्हीं का आश्रय लेकर ब्रह्म की परार्द्ध (सबसे बड़ी और अन्तिम) संख्या पूर्ण होती है और यही संसार की बार-बार रचना, भरण-पोषण तथा विनाश करते हैं। वेद इन्हीं की वन्दना करते हैं। गायत्री इन्हीं का गायन करती हैं, वैदिक ब्राह्मण प्रतिदिन इन्हीं की उपासना करते हैं। भगवान् श्रीराम के वंश के यह मूल हैं- अतएव धन्य हैं, यह भगवान सूर्य सभी के द्वारा प्रणाम करने योग्य हैं- ऐसा सोचकर उदीयमान सूर्य को प्रणाम करता हुआ गुरु की सेवा करने में कुशल कोई ब्राह्मण बालक अपने पर्ण कुटीर से

बाहर निकला।

पदव्याख्या -

मरीचिमालिनः = मरीचीनां माला अस्यास्ति स मरीचिमाली, मरीचिमाला + इनि
खेचराः = खे नभसि चरन्ति इति।
अहोरात्रम् = अहश्च रात्रिश्च अनयोः समाहारः। विभक्ति = विभज् + लट् + तिप्
आश्रित्य = आङ् + श्रि + क्त्वा (ल्यप्)।
चर्करीति = पुनः पुनः करोति, कृ + यङ् + लट् + तिप्
बर्भर्ति = पुनः पुनः परिपालयति, भृ + यङ् + लट् + तिप्। जर्हर्ति = पुनः पुनः संहरति, हृ + यङ् + लट् + तिप्। उपतिष्ठन्ते = उप + स्था + लट् + झि। प्रणम्य = प्र + नम् + यत्।
प्रणमन् = प्र + नम् + शतृ।
कुटीरः = 'ह्रस्वा कुटी' (कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः) इत्यनेन रः प्रत्ययः। निश्चक्राम = निर् + क्रम् + लिट्।

विशेष -

कथा प्रारम्भ करते हुए कवि अम्बिका दत्त व्यास ने सूर्य के अरुण आलोक के वर्णन द्वारा वस्तु निर्देश (प्रकाशात्मक) रूप मङ्गलाचरण किया है। जिससे सूर्योपासना की महत्ता प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक सिद्ध होती है।

उक्त गद्य में वैदर्भी रीति और प्रसाद गुण है। प्रारम्भ में मालारूपक और अयमेव से लेकर अन्त तक स्वभावोक्ति अलंकार है।

Scanned with CamScanner